जंगीराम की हवेली

(पर्दा खुलने पर चार पात्र एक दायरे में बैठे मातम मना रहे हैं। मसखरा आता है, उनकी तरफ देखता है और फिर सवाल करता है।)

मसखरा : क्या हुआ है ?

(एक पल के लिए सारे चुप हो जाते हैं, उसकी तरफ देखते हैं और फिर रोने लग जाते हैं।)

मसखरा : अरे भले लोगो,हुआ क्या है ?

सारे : जंगी राम मर गया।

मसखरा : कौन जंगी राम ?

सारे : जो इस हवेली का मालिक था।

मसखरा : *(आसपास हवेली की खस्ता हालत देखकर)* अरे ये हवेली है, ये हवेली, ये हवेली ? जिसके तेईस कमरे हैं... अठारह की छतें चू रही हैं, दरवाजे टूटे हैं, खिड़कियों का निशान नहीं, रोशनी का नाम नहीं, फर्श कच्चे हैं, दीवारें भुरभुरी हैं, भुरभुरा कर गिरती हैं, मच्छर हैं...बीमारी है...कीचड़ है...लाचारी है।

सारे : हां, कीचड़ है...लाचारी है...मच्छर हैं...बीमारी है।

मसखरा : अगर इस हवेली का मालिक मर गया है तो रोते क्यों हो ?

एक : क्योंकि हमें रोने के सिवाय कुछ आता ही नहीं है।

दो : जंगीराम जीता था... हम रोते थे।

तीन : जंगीराम मर गया है... हम रो रहे हैं।

चार : रोना हमारी आदत है।

एक : रोना हमारा काम है।

दो : रोना हमारा पेशा है।

तीन : रोना हमारी फितरत है।

चार : रोना हमारी किस्मत है।

मसखरा : तुम रो रहे हो क्योंकि तुमने करना-कराना कुछ नहीं है।

एक : हां, हमने करना-कराना कुछ नहीं।

दो : क्योंकि हम करने लायक हैं ही नहीं।

तीन : हम नीचे हों तो रोते हैं।

चार : हम ऊपर हों तो रोते हैं... *(पहले की तरह रोने लगते हैं)*

मसखरा : चुप... *(सभी चुप हो जाते हैं)* सोचो तो सही तुम रो क्यों रहे हो?

एक : हम इसलिए रो रहे हैं, क्योंकि हम इस हवेली में रहने वाले हैं।

दो : इसकी संस्कृति और सभ्याचार बहुत पुराने हैं।

तीन : यहां ऋषियों-मुनियों ने चरण डाले हैं।

चार : यहां पैगम्बर और अवतार हुए हैं।

एक : हमें बताया गया है, करो-कराओ कुछ नहीं।

बाकी : बस रोए जायो।

दो : धोती पहनो, रोए जायो।

तीन : लंगोटी पहनो, रोए जायो।

चार : नंगे रहो, रोए जायो।

एक : रोना ही हमारी भक्ति है।

दो : रोने में ही शक्ति है।

तीन : रोना ही क्रांति है।

चार : रोने में ही शांति है।

एक : रोना ही युक्ति है।

दो : रोने में ही मुक्ति है।

तीन : रोना ही आराम है।

चार : रोने में ही निर्वाण है। *(रोते हैं।)*

मसखरा : चुप... *(चुप हो जाते हैं)* अगर जंगीराम मर गया है तो उसकी जगह किसी दूसरे को दे दो।

सारे : पर किसे दें?

मसखरा : क्यों, उसका कोई पुत्र नहीं है?

एक : उसने शादी ही नहीं करवाई थी।

दो : उसकी शादी हुई ही नहीं थी।

मसखरा : क्या वो जती था?

तीन : नहीं।

मसखरा : क्या वो सती था?

चार : नहीं।

मसखरा : क्या वो संत था?

एक : नहीं।

मसखरा : फिर उसकी शादी क्यों नहीं हुई थी?

तीन : मैं बताता हूं।

मसखरा : तू?

तीन : हां... न वह साधु था, न वह संत था, न वह जती था, न ही वह सती था...

मसखरा : फिर उसकी शादी क्यों नहीं हुई थी?

तीन : क्योंकि वह शादी के काबिल ही नहीं था।

मसखरा : समझ गया...भई समझ गया, तभी तो वह इस हवेली का नेता था, मुखिया था, रहबर था, महरम था।

सारे : और वह जंगीराम मर गया... *(रोते हैं।)*

मसखरा : चुप... *(सारे चुप हो जाते हैं)* जंगीराम मर गया है, तुम सब इस हवेली के वारिस हो गए हो।

सारे : हम?

मसखरा : हां, तुम।

सारे : यह हवेली।

मसखरा : तुम्हारी हवेली।

सारे : जय बोलो इस हवेली की।

तीन : इस तरह नहीं।

बाकी : फिर?

तीन : सफेद धेली चांदी की।

सारे : जय बोलो महात्मा गांधी की।

तीन : नहीं, भूल गया।

सारे : फिर?

तीन : चांदी सफेद अधेली की।

बाकी : जय बोलो इस हवेली... *(नारे दोहराते हैं।)*

मसखरा : अरे इस हवेली की जय बुलाते हो... जिसके तेईस कमरे हैं और अठारह की छतें चू रही हैं, दरवाज़े टूटे हुए हैं, खिड़कियों का निशान नहीं है, फर्श कच्चे हैं, मच्छर हैं, बीमारी है, कीचड़ है, लाचारी है।

बाकी : हवेली तो हमारी है।

एक : अगर लोग भारत माता की जय बोल सकते हैं जिसमें–

दो : चालीस करोड़ लोग भुखमरी के पत्थर के नीचे हैं।

तीन : चार करोड़ लोग बेरोजगार हैं।

चार : ढाई करोड़ लोग सड़कों पर सोते हैं।

एक : पैंतालीस करोड़ अनपढ़ हैं।

दो : एक करोड़ के लिए पीने का पानी नहीं है।

तीन : पांच करोड़ के लिए अस्पताल नहीं हैं।

चार : कोई इलाज नहीं है, कोई दवाई नहीं है।

एक : अगर लोग फिर भी कह सकते हैं, भारत माता की जय।

बाकी : तो हम अपनी हवेली की जय क्यों नहीं कह सकते?

तीन : सफेद चांदी अधेली की।

बाकी : जय बोलो इस हवेली की।

मसखरा : पर तुम्हारी हवेली का मुखिया कौन होगा?

एक : अब यह हवेली हमारी है, यह लोकतंत्र है, हम अपने मुखिया का चुनाव खुद करेंगे।

दो : हां, मुखिया का इंतखाब होगा।

बाकी : हवेली में इंकलाब होगा।

(नारे लगाते हुए एक ओर निकल जाते हैं।)

मसखरा : *(नकल उतारकर)* मुखिया का इंतखाब होगा, हवेली में इंकलाब होगा... रोते हुए लोग इंतखाब करेंगे, बेड़ा ये गरक करेंगे, हवेली को बर्बाद करेंगे, उलटा ये इंकलाब करेंगे।

(चुनाव का जुलूस आता है।)

एक : हवेली की नेता, हमारी बीबी।

बाकी : दूर करनी है, जिसने गरीबी।

एक : वोट डालो बीबी को।

बाकी : दूर हटाओ गरीबी को।

दो : हवेली का नेता सिंह किसान।

बाकी : हमारी जिंदगी, हमारी शान।

दो : वोट डालो किसान को।

बाकी : जमकर खाओ शाम को।

तीन : दबे-कुचलों की आवाज़।

बाकी : हमारा नेता बाबा राम।
तीन : वोट डालो राम को।
बाकी : जमकर पीयो शाम को।
चार : हर कोने से आवाज़ है आई।
बाकी : देश का नेता मुरारी भाई।
चार : पूरा करे ख़्वाब को।
बाकी : बंद करे शराब को।
चार : वोट डालो मुरारी को।
बाकी : दूर करो बीमारी को।
(नारे लगाते हुए बाहर जाते हैं।)

मसखरा : एक उम्मीदवार बूढ़ा चौधरी
दूसरी एक चतुर नारी
तीसरा बाबू है बिहारी
चौथा है दास मुरारी
बतायो, अब किसे देनी है बारी?
सुन रे दीने, सुन रे फीने
सुन रे राजा, सुन रे बाजा
अगर तुझे चाहिए नौकरी
मुखिया चुन ले बूढ़ा चौधरी
अगर चाहता है हटे गरीबी
उसकी दवा जानती बीबी
अगर तुझे कोई गुप्त बीमारी
दूर करेगा बाबू बिहारी
अगर इनमें से नहीं कोई सूत
तो मुरारी पिलाएगा तुझे मूत
सबने की तेरी सवारी
बता, अब किसे देनी है बारी?
(ढोल बजने की आवाज)

जुलूस : जीत गया भई जीत गया
पैसे वाला जीत गया
नोटों वाला जीत गया
हार गया भई हार गया

दमड़ी वाला हार गया
अधेले वाला हार गया
(जुलूस बाहर जाता है।)

मसखरा : हवेली का इंतखाब हुआ है
पैसे का हिसाब हुआ है
उलटा इंकलाब हुआ है
(धीरे-धीरे फेडआऊट)

दूसरा दृश्य

(पहले वाली ही जगह है, मुखिया और उसके चार साथी आते हैं। उनके सिरों पर बड़े-बड़े पग्गड़ हैं, वे बड़ी शान से आकर बैठते हैं, मुखिया दूसरों से ऊंचा बैठता है, उनके पेट बड़े-बड़े हैं।)

मसखरा : चुना गया एक मुखिया
चार मिला लिए उसने मंत्री
भानुमती ने कुनबा जोड़ा
न कोई दूल्हा न कोई दुल्हन
हवेली की किस्मत खराब
मुखिया का इंतखाब हुआ है
हवेली की किस्मत बर्बाद
(मसखरा अपनी जगह पर बुत बन जाता है और मुखिया अपने मंत्रियों से बातचीत शुरू करता है।)

मुखिया : तुम्हें पता है कि हमने चुनावों में एक वायदा किया था कि कीचड़ दूर हटाएंगे।

एक : वो तो किया था।

मुखिया : फिर कीचड़ के बारे में क्या सोचा है ?

दो : इसका तो एक ही समाधान हो सकता है कि हवेली का पानी नाली के रास्ते बाहर निकाला जाए।

मुखिया : तो फिर निकाल दो।

तीन : पर सवाल पैदा होता है कि नाली बाहर कहां से जाएगी ?

मुखिया : जहां से उसे जाना चाहिए।

चार : बाहर जाने का एक ही रास्ता है।

मुखिया : कौन सा ?

एक : वो है निहाले ताये के दरवाज़े के आगे से।

निहाला : *(गालियां बकता हुआ आता है)* मैं तो काटकर रख दूंगा, जो मेरे दरवाज़े के आगे से नाली निकालेगा। मैं एक-एक कुतिया के पिल्ले को देख लूंगा... अपनी मां के खसम, कहते हैं नाली मेरे दरवाज़े के आगे से निकलेगी।

एक : बाबा, होश से बात कर... सरकार बैठी है।

निहाला : बैठी है तो बैठी रहे।

एक : तेरे दरवाज़े के आगे से नाली तो निकाली ही जाएगी क्योंकि नीची जगह उसी तरफ है।

निहाला : हां, गरीबों की जगह तो नीची ही होती है।

मुखिया : क्या मतलब ?

निहाला : मुखिया जी, कल जब इनके महकमे ने सर्वे किया तो नीची जगह सेठ दयाल की थी, पर इसने मेरे सामने उससे रिश्वत ली।

मुखिया : कितनी रिश्वत ली ?

निहाला : यह नहीं पता, इन्होंने हाथ कमीजों के नीचे छुपा लिए थे।

एक : यह झूठ है।

निहाला : क्या तुमने हाथ कमीजों के नीचे नहीं छुपाए थे ?

एक : छुपाए थे।

मुखिया : क्यों ?

एक : यह पर्दे की बात है और हवेली के हित में है कि यह बात बाहर न जाए।

निहाला : इसमें हवेली का कोई हित नहीं है।

एक : हित है।

मुखिया : बाबा, जहां हवेली के हित की बात आ जाए, वहां हमारे हाथ भी बंध जाते हैं, अगर तू चाहता है कि यह पता लगाया जाए कि कमीज़ के नीचे क्या छुपाया गया और इसका लोगों को पता चलना चाहिए, तो हम एक कमीशन नियुक्त करने को तैयार हैं।

निहाला : मुझे इस कमीशन की ज़रूरत नहीं है।

मुखिया : तो फिर बात को आगे बढ़ाया जाए।

एक : हमने यंत्र लगाकर देख है कि ताये निहाले की जगह नीची है।

निहाला : तुम्हारे यंत्र को मैं भूला नहीं हूं।

एक : यह विज्ञान का यंत्र है।

निहाला : नहीं, यह पैसे का मंत्र है, जनाब, आपका मंत्री चोर है, मैं इसे पोतड़ों से जानता हूं।

मुखिया : वो कैसे?

निहाला : वर्ष 1949 में यह गुरुद्वारा से जूते चुराता पकड़ा गया था।

बाकी : यानी यह जूताचोर है?

निहाला : वर्ष 1956 में यह मुर्गी चुराता पकड़ा गया था।

बाकी : यानी यह मुर्गीचोर है?

निहाला : बीते सालों में हर साल किसी न किसी चोरी या हेराफेरी में पकड़ा गया है।

दो : जनाब यह कोई गंभीर बात नहीं है।

मुखिया : क्यों?

तीन : हमारे संविधान में कहीं नहीं लिखा कि जूताचोर मंत्री नहीं बन सकता।

चार : हमारा संविधान मुर्गीचोरों के संबंध में भी चुप है।

दो : हमारा संविधान हर किस्म के चोरों के संबंध में चुप है।

मुखिया : बाबा, तेरे इलज़ाम ठीक हो सकते हैं, पर हम संविधान की किताब से बंधे हैं, इसलिए हमारा यही फैसला है कि नाली तेरे दरवाज़े के आगे से ही निकाली जाएगी।

निहाला : पर मैंने कोर्ट से स्टे ले लिया है।

एक : हम सैशन में अपील करेंगे।

निहाला : मैं हाईकोर्ट जाऊंगा।

एक : हम सुप्रीम कोर्ट में चले जाएंगे।

मुखिया : तो फैसला यह हुआ कि जब तक कोर्ट फैसला नहीं देती, तब तक यह नाली नहीं निकाली जाएगी।

दो : जनाब, इस कीचड़ का क्या होगा?

मुखिया : यह कीचड़ यहीं रहेगा।

तीन : कीचड़ में पैदा हुए मच्छरों का क्या होगा?

मुखिया : वे भी यहीं रहेंगे।

चार : बीमारी फैलने का डर है।

मुखिया : हमारे बुजुर्ग इस बीमारी के खिलाफ लड़ते रहे हैं।

एक : यह ठीक है, हम इस लड़ाई के तजुर्बेकार सिपाही हैं।

दो : हां, हमारा इतिहास पुराना है।

तीन : हां, हमारी संस्कृति पुरानी है।

चार : हमारी हवेली में ऋषियों मुनियों ने चरण डाले हैं।

मुखिया : हां, हमारी हवेली में पैगम्बर और अवतार आए हैं।

एक : हम हर आंधी, हर तूफान, हर बीमारी अपने ऊपर झेल सकते हैं।

दो : हमें देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त है।

तीन : कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

एक : सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।

चार : सफेद चांदी अधेली की, जय बोलो इस हवेली की।

(यह नारा लगाते हुए बाहर चले जाते हैं।)

मसखरा : हवेली का है रथ पुराना
पहिया उसका वहीं रहेगा
जिस कीचड़ में पहले फंसा है
उस कीचड़ में अब भी फंसेगा
हवेली का है दस्तूर कदीमी
न कुछ था पहले बदला
न कुछ अब बदलेगा
अभाव में था जो जन्मा
अभाव में ही वो मरेगा

तीसरा दृश्य

(पहले वाला ही स्थान है। हवेली में एक सुबह का दृश्य है। एक तरफ लोग शौच जाने के लिए कतार में खड़े हैं। दूसरी तरफ जल पर घड़ों और बाल्टियों की लाइन लगी है, तीन आदमी चबूतरे पर बैठे दातुन कर रहे हैं। यह सीन कुछ देर संगीत की लय में चलता है। संगीत बंद होता है।)

एक : *(दो से)* नौकरी का बंदोबस्त हुआ?

दो : नहीं, कहीं नहीं, बहुत से इंटरव्यू दिए पर कामयाबी नहीं मिली।

तीन : तू सिफारिश के बिना कामयाबी ढूंढ़ता है?

एक : क्यों भाई साहब, तेल मिला?

तीन : तेल कहां मिला, दो घंटे लाइन में खड़े होकर आ गया हूं, तुम घी वाली लाइन में खड़े थे, मिला?

एक : नहीं।

तीन : अगर तुम्हें घी नहीं मिला तो मुझे तेल कहां मिलना था?

एक : हर चीज़ की कमी है।

दो : कमी जैसी कमी?

एक : कमी की तो हद हो गई है।

दो : अब तो कुछ होना चाहिए... इस तरह कितनी देर तक चलेगा?

दो : चल तो रहा है, पर यह भी कोई चलना है?

एक : इस तरह की ज़िंदगी से तो मौत ही अच्छी होती है।

तीन : भाई साहब, आप मर क्यों नहीं जाते...मरना तो कोई मुश्किल नहीं?

दो : बच्चों का ख़याल आ जाता है... पीछे ख़्वार होंगे।

एक : तो तू अब उनका क्या संवार रहा है?

(हंसी, संगीत, और अखबार वाले का आगमन)

अखबारवाला : आज का अखबार आया है
खबरें कई हजार लाया है
कहीं बाढ़ कहीं भूचाल आया है
हवाई जहाज गिर गया
रेल पटरी से उतर गई
बस खंदक में गिर गई
दलित लड़की की इज्ज़त लुट गई
चीनी महंगी हो गई इज्ज़त सस्ती हो गई
पर सबकुछ ठीक-ठाक है
अमन और कानून बहाल है
वज़ीर का बयान आया है
आज का अखबार आया है
अंतरिक्ष में यान गया है
विज्ञान का कमाल हुआ है
बधाई का संदेश आया है
बड़ी महान विजय हुई है
मुखिया का बयान आया है
आज का अखबार आया है
खबरें कई हजार लाया है

(तीनों दातुन करते हैं और साथ-साथ अखबार पढ़ते हैं। यह संगीत

की लय में होता है। संगीत बंद होता है।)

एक : ले भई, अपने वैज्ञानिकों ने कमाल कर दिया।

दो : अंतरिक्ष में यान पहुंचा दिया।

तीन : पढ़ो, क्या उन्होंने धरती पर भी कोई कमाल कर दिखाया?

एक और दो : पढ़ते हैं...पढ़ते हैं।

एक : तुम्हें पता है अंतरिक्ष में पहला विमान भेजने वाले हमारे ही पूर्वज थे।

दो : आकाश में अग्निबाण दागने वाले हमारे ही दादा-परदादा थे।

एक : उनके छोड़े हुए विमान अब तक अंतरिक्ष में चक्कर काट रहे हैं।

दो : और उनकी औलाद धरती पर लटकी हुई है... हमें जातपात की उलझन में धकेलने वाले हमारे ही बुजुर्ग थे।

एक : तारा विज्ञान हमारी ही खोज है।

दो : गणित हमने दुनिया को सिखाया।

एक : फिलॉसफी हमने ही दुनिया को दी है।

दो : ज्ञान और विज्ञान सब हमने ही शुरू किए।

तीन : और दुनिया चांद पर पहुंच गई, हम वहीं के वहीं रहे।

एक : तो क्या हुआ, अगर हम वहीं के वहीं हैं... पर हमारे पूर्वज बहुत महान थे।

दो : क्या यह छोटी बात है?

एक : जब दुनिया अभी पत्थरों से ही आग जला रही थी, हमारे लोग बर्तनों में खाना खाते थे।

दो : जब दुनिया जंगलों में नंगी घूम रही थी, हमारे पूर्वजों ने लंगोटी की खोज कर ली थी।

एक : लंगोटी के सहारे ही दुनिया की तहजीब आगे बढ़ी।

दो : लंगोटी न होती तो आदमी पशु ही रहता।

तीन : दुनिया ने उससे आगे बहुत कुछ कर लिया है, हमारी लंगोटी, लंगोटी ही रही।

एक : हमारे पूर्वजों की पहली लंगोटी लोहे की थी, इसलिए लोहा हमने ईजाद किया है।

दो : वो लंगोटी बहुत भारी थी, फिर हमने तांबे की लंगोटी बनाई।

एक : हमने हर किस्म की धातु ईज़ाद की, इसका सबूत अजायबघर में संभाली हमारी लंगोटियों से मिल सकता है।

दो : फिर यह लंगोटी कपड़े की बनी, इसलिए कपड़ा भी हमने ही खोजा।

तीन : और अब यह लंगोटी मोम की हो गई।

एक : इसीलिए देश में दुराचार है।

दो : भ्रष्टाचार है।

तीन : बस अचार ही अचार है... रोटी नहीं है।

एक : रोटी हमें मुखिया देंगे।

दो : वे हमारे चुने हुए मुखिया हैं।

तीन : वे आ रहे हैं, आओ उन्हें कहें।

(चार मुखिया आते हैं। उन्होंने कानों में उंगलियां डाल रखी हैं।)

एक : मुखिया जी, आटा नहीं मिलता।

दो : मुखिया जी, तेल नहीं मिलता।

एक : मुखिया जी, घी नहीं मिलता।

दो : मुखिया जी, चीनी नहीं मिलती।

एक : मुखिया जी, कपड़ा नहीं मिलता।

दो : मुखिया जी, मकान नहीं मिलता।

तीन : तो क्या हुआ, रब्ब का नाम तो मिलता है।

एक : मुखिया जी, कुछ तो बोलो।

दो : हमारी बात पर गौर करो।

एक : मुख तो खोलो।

दो : कुछ तो बोलो।

तीन : जो बोलना था बोल चुके।
जो कहना था कह चुके।
पांच साल बाद फिर बोलेंगे।
सच और झूठ फिर तोलेंगे।
बंद मुख को फिर खोलेंगे।

(चारों मुखिया कानों में उंगलियां डालकर खड़े रहते हैं। बाकी लोग उस मूक दशा में जैसे उन्हें कुछ कह रहे हों। मसखरा मंच पर आता है।)

मसखरा : खाली पीपे, खाली ढोल
खाली पेट, खाली कटोरा
मिले न आटा, मिले न चावल

कहां हो गया सब कुछ लोप
मैं कहता हूं सच्चे बोल
सब कुछ पहुंचा काली मंडी
सेठों के पेट हैं गोलम गोल
खा गए आटा, खा गए चावल
रोते लोग, चिल्लाते लोग
रो-रो पागल हो गए लोग
हाकिम कान में उंगली दबाए
जूं न सरके कान के पास
फिर क्या करें ये बेचारे लोग
ठंडा पानी पी मरें
ये भूखे-नंगे लोग
पर क्यों मरें बेचारे लोग
गर्दन हाकिम की क्यों न पकड़ें
ये भूखे-नंगे सारे लोग
फाड़ डालें ये मोटे पेट
निकाल लें एक-एक दाना चावल
ये भूखे-नंगे सारे लोग।

(संगीत की थाप बजती है। मूक स्थिति खत्म होती है। मुखिया आगे-आगे दौड़ते हैं और लोग पीछे-पीछे एक दो चक्कर लगाते हैं। फिर स्टेज से बाहर चले जाते हैं। सीटियों की आवाज़, भगदड़, फिर गोलियों की आवाज़... कुछ लहूलुहान लोग मंच से निकलते हैं। भगदड़ मच जाती है। शोर-शराबा, बिजली का जलना-बुझना... और शोर और बिल्कुल चुप।)

मसखरा : आगे भागें मुखिया चोर
पीछे भागें भूखे लोग
आगे-आगे मोटे पेट
पीछे-पीछे भूखे पेट
सुखी सदन के पहरेदार
खाकी वर्दी वाले यार
चले गोली, चले बंदूक
हवेली हो गई खून से लथपथ

आगे भागें मुखिया चोर
पीछे भागें भूखे लोग
(फेडआऊट। मंच खाली हो जाता है।)

चौथा दृश्य

(स्थान पहले वाला ही। चार मुखिया एक-दूसरे के पेट पर सिर रखकर सो रहे हैं। दूसरी ओर चार लोग मातम की स्थिति में बैठे हैं। संगीतमयी रुदन और खर्राटों की आवाज़ आती है। यह संगीत कुछ देर तक चलता है और फिर बंद हो जाता है... एकदम चुप्पी।)

एक : ऐसी आफत पहले कभी नहीं आई।

दो : घर-घर में बीमारी है।

तीन : चार नंबर वालों के दो आदमी मर गए हैं।

चार : सात नंबर वालों का तो सारा परिवार ही खत्म हो गया।

मसखरा : लोग चीख रहे हैं... रो रहे हैं, मातम मना रहे हैं... पर हाकिम कुंभकर्णी नींद सो रहे हैं। *(खर्राटों की आवाज़ें।)*

एक : आओ मुखिया को जगाएं।

बाकी : हम पर क्या बीत रही है... उसे बताएं।

(चारों धीरे-धीरे मुखिया के पास जाते हैं।)

एक : मुखिया जी... *(कोई असर नहीं... बल्कि खर्राटे।)*

दो : श्रीमान् मुखिया जी... *(खर्राटे)*

तीन : श्रीमान् के श्रीमान् मुखिया जी... *(खर्राटे)*

चार : श्रीमान् श्रीमानों के श्रीमान् मुखिया जी... *(खर्राटे)*

मसखरा : ये इस तरह नहीं जागेंगे।

बाकी : *(इशारे से)* फिर कैसे जागेंगे?

मसखरा : मैं बताता हूं।

(उनके कानों में कुछ कहता है। वे सिर हिलाते हैं, जैसे उन्होंने सबकुछ समझ लिया है। चारों मुखिया के पास जाकर)

एक साथ : *(ऊंची आवाज़ में)* ओ मुखियो, मां के खसमो, उठो।

(सारे अफरा-तफरी में उठ जाते हैं।)

एक : मुखिया जी, बीमारी फैल गई है।

मुखिया : बीमारी तो फैलती ही रहती है।

दो : मुखिया जी, लोग मर रहे हैं।

मुखिया : लोग तो मरते ही रहते हैं।

बाकी मुखिया : हां हां, लोग तो मरते ही रहते हैं।

तीन : मुखिया जी, लोग रो रहे हैं।

मुखिया : लोग तो रोते ही रहते हैं।

बाकी मुखिया : हां हां, लोग तो रोते ही रहते हैं।

चार : हवेली में हाहाकार मचा है।

मुखिया : हाहाकार मचा ही रहता है।

बाकी मुखिया : हां हां, हाहाकार मचा ही रहता है।

लोग : पर पूछो तो सही क्यों हाहाकार मचा हुआ है।

मुखिया : क्यों मचा हुआ है ?

लोग : बीमारी क्यों फैल गई है ?

मसखरा : मैं बताता हूं बीमारी की जड़।

(मसखरे ने चूहा पकड़ रखा है)

चारों मुखिया : चूहा है... पर ये चूहा आप कहां से!

मसखरा : इनके बिल हवेली के फर्श में हैं।

लोग : हम हवेली का फर्श उखाड़ देंगे।

चारों मुखिया : नहीं नहीं... यह कानून की उल्लंघना होगी।

मसखरा : इनके बिल हवेली की छत में हैं।

लोग : हम हवेली की छत उखाड़ देंगे।

चारों मुखिया : *(घबराहट में)* नहीं, नहीं।

मसखरा : बीमारी से बचने की एक ही राह।

लोग : भुरभुरी दीवारें दो ढहा।

बड़ा मुखिया : नहीं...नहीं।

एक मुखिया : इसकी एक ईंट उस वक़्त रखी गई जब महात्मा बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ।

तीसरा मुखिया : गरीब सुदामा को कृष्ण भगवान मिले।

एक : पर हवेली की नींव में बीमारी है।

दो : मनहूसियत है।

तीन : दरिद्रता है।

चार : अब यह हवेली पुरानी हो गई है।

चारों मुखिया : एर यह हमारे पूर्वजों की निशानी है।

बड़ा मुखिया : एक ईंट गौतमशाही है।

एक मुखिया : एक ईंट बाबरशाही है।

तीसरा मुखिया : एक ईंट नानकशाही है।

मसखरा : पर अब इसकी हर ईंट में बीमारी के ज़रासीम हैं।

लोग : हम इन ईंटों को क्या चाटें... जब जिंदा लोग मर रहे हों।

मसखरा : बीमारी से बचने की एक ही राह।

लोग : भुरभुरी दीवारें दो ढहा।

(संगीत बजता है, लोग इधर-उधर दौड़ते हैं। गेंती, हथौड़े, कस्सी, सब्बल उठाते हैं।)

मुखिया : इस हवेली को उखाड़ दोगे तो रहोगे कहां?

एक : जो हाथ ढहा सकते हैं।

बाकी : वे नया निर्माण भी कर सकते हैं।

(वे बाजू ऊपर उठाते हैं, मुखिया गिरते हैं, जैसे उनकी मां मर गई हो। एक मूक-दृश्य बन जाता है। लोगों ने जोश से हथियार उठा रखे हैं और मुखिया नीचे गिरे पड़े हैं।)